

आर्तव (ARTAVA)

Dr. Savita

Assistant Professor
Dept. of Kriya Sharir

Course Outcomes

1. Understand the concept of Upadhatu in Ayurveda.
2. Explain the formation, functions, and importance of Ārtava as an Upadhatu of Rasa Dhatu.
3. Correlate Ayurvedic knowledge of Ārtava with modern physiology (menstrual physiology, hormones).
4. Analyze clinical conditions related to Ārtava (Artavavaha srotas dushti, menstrual disorders).

Program Outcomes

1. Understand the concept of Upadhatu in Ayurveda.
2. Explain the formation, functions, and importance of Ārtava as an Upadhatu of Rasa Dhatu.
3. Correlate Ayurvedic knowledge of Ārtava with modern physiology (menstrual physiology, hormones).
4. Analyze clinical conditions related to Ārtava (Artavavaha srotas dushti, menstrual disorders).

Miller's Pyramid

Knows: Defines Upadhatu & Artava from Samhitas.

Knows How: Explains process of Artava utpatti (formation) and its role.

Shows How: Discusses clinical implications like Artava-kshaya, Anartava etc.

Does: Applies knowledge during case discussions, presentations, and viva.

आर्तव (Artava) की परिभाषा

आर्तव शब्द का सामान्य अर्थ है रजो: धर्म अथवा स्त्रियों में प्रतिमास होने वाला मासिक स्राव।

यह रसधातुज उपधातु है, जो प्रजनन एवं गर्भधारण हेतु आवश्यक है।

 श्लोक:

> “रसादुपधातु द्वौ स्तन्यमार्थवमेव च।”
(अष्टाङ्ग हृदयम्, सू. 11/4)

अर्थ – रसधातु से दो उपधातु उत्पन्न होते हैं – स्तन्य और आर्तव।

आर्तव का स्वरूप

आर्तव का स्वरूप लोहित वर्ण (blood-like) बताया गया है।

आयुर्वेद में आर्तव के दो अर्थ –

1. बीज रूप आर्तव (ओवम/ovum) – गर्भाधान हेतु।
2. रजः स्वरूप आर्तव (menstrual blood) – प्रतिमास स्त्री शरीर से निष्कासित।

आर्तव की उत्पत्ति

रसधातु से पोषण के क्रम में आर्तव बनता है।

इसका स्थान – गर्भाशय एवं योनिमार्ग।

 श्लोकः

> “रजः स्त्रीणामुपधातुरुक्तः”
(च. चि. 30/14)

आर्तव के लक्षण

मासिक धर्म प्रतिमास ३ दिन तक चलता है।

सामान्य रंग – लोहित (red), पद्मराग-सदृश।

गन्ध – नातिदुर्गन्धि (not foul smelling)।

मात्रा – लगभग ३५-५० मिलीलीटर।

आर्तव की क्रिया

1. प्रजनन हेतु गर्भाधान।
2. स्त्री के स्वास्थ्य और स्त्रीत्व का द्योतक।
3. शरीर में धातु संतुलन बनाए रखना।

आर्तव विकार (Disorders)

आर्तव क्षय → कम मात्रा में आना।

अनार्तव → मासिक धर्म का अभाव।

अत्यार्तव → अधिक मात्रा में रक्तस्राव।

क्लिष्ट आर्तव → वेदना युक्त मासिक धर्म।

 श्लोकः

> “आर्तवक्षयोऽनार्तवमत्यार्तवक्लिष्टार्तवाः”
(आ.ह. सू. 11)